वर्ष-4, अंक-20-23

मई - दिसंबर 2020

मूल्य - 50 रुपये

गाँव के लोग

प्रगतिशील ग्रामीण चेतना की द्वैमासिक पत्रिका

देवाशीष

- श्रम कानूनों का खात्मा: विकास के पहिए को उल्टा घुमाना
- बाबरी मस्जिद, रामजन्मभूमि और बौद्ध पुरावशेष
- संस्कृति और सामाजिक न्याय
- दिल्ली हिंसा का सच

वर्ष-3, अंक-20-23, मई-दिसम्बर, 2020

गाँव के लोग

प्रगतिशील ग्रामीण चेतना की द्वैमासिक पत्रिका

संपादक
रामजी यादव

कार्यकारी संपादक
अपर्णा

साहित्य संपादक
केशव शरण

प्रबंध संपादक
गोकुल दलित

संपादक मंडल
ओमप्रकाश अमित, अलकबीर
कृपा सिंधु यादव

मुख्य संवाददाता
लक्ष्मी नारायण यादव

कानूनी सलाहकार
हरिंद्र प्रसाद

अक्षर संयोजन
अमन विश्वकर्मा

कार्यालय
ग्राम- अहिरान, पोस्ट- चमाँव, शिवपुर
जिला- वाराणसी- 221003
09479060031, 09454684118, 09415295137
Email- gaonkelogbsb@gmail.com

मूल्य 50/-, वार्षिक रु. 300/-चार वर्ष रु. 1000/-
संस्था और पुस्तकालय रु. 600/-वार्षिक
रु. 2200/- चार वर्ष
आजीवन रु. 10,000/-
विदेशों में 75 डॉलर
बैंक का नाम : बैंक ऑफ बड़ौदा
शाखा- दानियालपुर, वाराणसी
खाताधारक का नाम
गाँव के लोग सोशल एण्ड एजुकेशनल ट्रस्ट
Gaon Ke Log Social and Educational Trust
खाता संख्या : 48120100005515
IFSC : BARB0DANIYA
(IFSC कोड में बी और डी के बीच में शून्य/ जीरो)
भुगतान की पुष्टि हेतु ह्वाट्सएप नम्बर 09479060031 पर सूचित करें।
(पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं।)

इस अंक में

असामयिक अनुपस्थितियाँ
भूल न पाएँगे कभी... — केशव शरण — 2
वह जिसने रोशन किया था शहर को, उदास कर गया — अर्पिता श्रीवास्तव — 4
स्मृति को नमन करते हुए — हरिन्द्र प्रसाद — 6
गाँव-देस की बात
तीनों काले कृषि कानून वापस लो! — रामजी यादव — 7
सपने संदेह
आखिर अखिलेश ही दोषी क्यों? — केएल सोनकर 'सौमित्र' — 9
दस्तावेज़
आदमी और ईश्वर — ई.वी. रामासामी पेरियार — 10
बहस तलब
बाबरी मस्जिद, रामजन्मभूमि और बौद्ध पुरावशेष — राम पुनियानी — 20
संस्कृति और सामाजिक न्याय — ओमप्रकाश कश्यप — 22
सर्वहारा मोर्चा
देश को कहाँ ले जाएगा अयोध्या का फैसला — सुशील मानव — 25
श्रमिक विभाजन का ऐतिहासिक सच — संतोष कुमार यादव — 33
विकास के पहिए को उल्टा घुमाना — सीमा आजाद — 36
जनसंख्या, महामारी और सामाजिक संकट — घनश्याम कुशवाहा — 40
मुद्दा
दिल्ली हिंसा का पूरा सच — सुशील मानव — 44
दिल्ली दंगा
पत्रकारों पर हमला : सभी हमलावर 'हिंदू' ही क्यों थे — सुशील मानव — 55
मेरी कहानी
मेड़-मेड़ पर जात! — लौटनराम निषाद — 58
लिखंत पढ़ंत
पराजय — गोरख प्रसाद 'मस्ताना' — 62
स्वयं-भू — शेर सिंह — 65
हजामत — दीपक शर्मा — 70
कविताएँ - श्वेता पांडेय, देवेश पथसरिया, प्रतिभा सिंह — 75
ग़ज़लें - यदुनंदन राठौर, रजनीश-साहिल — 77
किताबें
अलग-अलग भावों को समेटती कविताएँ — मधुलिका बेन पटेल — 79
अरख परख
साहित्य का पर्यावरण काल — सीमा संगसार — 82
जीवन को स्वस्थ्य बनाने वाले
सफाई देवताओं पर कुछ विचार! — जनार्दन दास — 84
मुड़-मुड़ के देखना
गोदान और मार्क्सवादी आलोचना — मनोज कुमार मौर्य — 89
बहुत याद आएँगे
डॉ. श्याम बिहारी रायः एक आंदोलनकारी प्रकाशक — आनंद स्वरूप वर्मा — 92
अंबेडकरी आंदोलन का एक स्तंभ — एच.एल. दुसाध — 95
मास्टर प्रताप सिंह और उनके सम्पादकीय — केशव शरण — 100
आसपास
बस्तर में कुछ दिन — किशन लाल — 102
गाँव के लोग
लइकी हर जोती! — चन्द्रदेव यादव — 107
लोक-फोक
पीड़ित-मानवता के पक्ष में खड़े रचनाकार थे — 115
अस मानुस की जात — 120

अंदर के चित्र पंकज दीक्षित और रोहित पथिक के हैं

'गाँव के लोग' से संबंधित सारे विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय होगा। स्वामी-प्रकाशक व मुद्रक अपर्णा द्वारा गाँव के लोग सोशल एंड एजुकेशनल ट्रस्ट, अहिरान, चमाँव, वाराणसी के लिए प्रकाशित तथा वाराणसी से मुद्रित।

भूल न पाएँगे कभी...

■ केशव शरण

हिंदी काव्य जगत के लिए यह स्तब्ध कर देने वाली खबर रही कि कोरोना संक्रमण के कारण समकालीन कविता के महत्त्वपूर्ण कवि मंगलेश डबराल का निधन हो गया है। विष्णु खरे जैसे आधुनिक कविता के शिल्पी के देहावसान के बाद मंगलेश डबराल का निधन हिंदी काव्य प्रदेश को वीरान-सा कर देने वाला है। दोनों ही कवि न अभी रुके थे न चुके थे। निरंतर ज्ञानात्मक संवेदनाओं से पूरित सुंदर और सशक्त कविताएँ देने वाले इन दोनों कवियों की उपस्थिति आज के दौर में आश्वस्तकारी और आवश्यक थी। समय की चुनौतियों को समग्रता में समझने, यथार्थ की परतों में उतरने, जनता की पीड़ाओं और सत्ता की कारगुजारियों को ईमानदारी और साहस से रखने की जो सलाहियत इनमें थी वह समकालीन हिंदी कविता की सामूहिक शक्ति और प्रगति में सफल रूप से योगकारी थी। धूमिल के साथ अगर हिंदी कविता का एक दौर खत्म होता है तो मंगलेश डबराल के साथ एक नया समय शुरू होता है। टुकड़े-टुकड़े आवेश, अमूर्तता और भाषायी चमत्कारों की जगह कथ्य और अभिव्यक्ति को शांत, चिंतनशील और संयमित तरीके से रूपायित करने का दौर, जो समय की बढ़ती विडम्बनाओं, विसंगतियों और चुनौतियों के बीच आज भी बना है, लेकिन अफसोस कि आगे इनमें अपने हस्तक्षेप और योगदान के लिए मंगलेश डबराल हमारे बीच नहीं होंगे। अपने इस अप्रतिम योद्धा के बिना हमें अपने मोर्चे पर डटे रहना होगा।

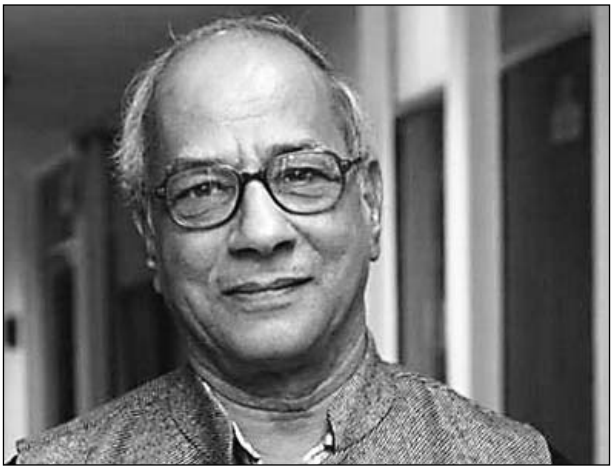

मंगलेश डबराल

सन 77-78 में जब मैंने कविता करना शुरू किया था तब मंगलेश जी प्रसिद्ध हो रहे थे। अस्सी के दशक में उनके पहले काव्य संग्रह *पहाड़ पर लालटेन* की काफी चर्चा और धमक थी। बर्निंग ब्राइट बाघ पहले मंगलेश डबराल की कविता में डुकरता सुनायी दिया था जिसकी गूँज पहाड़ से मैदान तक छा गयी थी। बाद में यह बाघ अपने विभिन्न रूपों में केदारनाथ सिंह की कविताओं में आता है। समकालीन कविता की जो विशेषताएँ हैं वही मंगलेश डबराल की भी काव्य-विशेषताएँ हैं और जो मंगलेश डबराल की काव्य-विशेषताएँ हैं वे समकालीन कविता की भी विशेषताएँ हैं।

समकालीन कविता की विशेषता है भावों और विचारों की न सिर्फ भावप्रवण अभिव्यक्ति बल्कि एक सचेत, संवेदनात्मक वैचारिकी का समय सापेक्ष कलात्मक उपयोग। अपने भोगे यथार्थ में संसार की वास्तविकताओं की परख और कथ्य तथा शिल्प में निरंतर अन्वेष। लोकतंत्र में विश्वास और जनता के पक्ष में सत्ता का साहस और ईमानदारी से प्रतिरोध। उत्पादक और शोषित वर्गों से भावनात्मक जुड़ाव। थोथी नारेबाजी की जगह ठोस बयान (सार्थक वक्तव्य) की मजबूती। जीवनानुभवों का कलात्मक

दोहन और स्वस्थ जीवन-दृष्टि। मंगलेश डबराल की कविता में ये खूबियाँ मौलिकता के साथ विद्यमान हैं।

पत्रकारिता मंगलेशजी आजीविका थी जिसमें उनकी निजी रुचि और उद्देश्य दोनों समाहित थे। उनकी कविता भी सोद्देश्य थी जिसमें कला और संगीत के प्रति उनकी गहरी रुचि झलकती थी। उनके काव्य संग्रह *आवाज़ भी एक जगह है* में उनकी कई कविताएँ मिल जाएँगी जिनमें कला और संगीत को लेकर विडम्बनात्मक और विरोधी स्थितियों का संघर्ष है जिनको देखना-दिखाना उनके काव्य-उद्देश्य के अंतर्गत आता था।

मंगलेश डबराल सहज रूप से जीवनानुभवों के कवि हैं। वे अपने अनुभवों को कविता में संवेदनशीलता से व्यक्त करते हैं लेकिन एक बड़े वैचारिक वितान के तले। वे अपनी कविता को एक मार्मिक बिंदु से शुरू करते हैं और एक मार्मिक बिंदु पर समाप्त करते हैं। बीच के चरणों में हम दृश्यों, आवाजों, संचारी भावों, तथ्यों, स्थितियों और गतिविधियों से गुजरते हुए उनके सशक्त बयान का रस प्राप्त करते हैं। उनकी कविता में बोझिलता, दुरुहता और नीरसता नहीं है। यही उनका काव्य-कौशल है। उनकी एक कविता है - दृश्य। इसकी प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं - *जिनसे मिलना संभव नहीं हुआ/ उनकी भी एक याद बनी रहती है जीवन में। और आखिरी पंक्तियाँ हैं - एक अकेलापन है जिसकी याद किसी और / अकेलेपन में आती है/ वह दृश्य बचा रहता है जो चारों तरफ/ अदृश्य हुआ जाता है।* परिवेश और प्राणियों के साथ हमारा जो रागात्मक संबंध है, उसका जो सुख है, दुख है, आकांक्षा है, अनुपलब्धता है, इस कविता के बीच वह सब एक तड़प और बेधकता के साथ मौजूद है। कविता का एक सुधी पाठक जो कविता के कथ्य और अपने जीवनानुभवों में साम्य पाता है, एक सच्ची और सुंदर कविता का अनुभूतिगत आनंद लेता है।

मंगलेश डबराल कल्पनाशील तरीके से भी कविता रचकर चमत्कृत करते हैं। इसकी ताकीद में उनकी एक कविता है - मंगल। कवि मंगल ग्रह पर है और विषय-विस्तार के बाद अंतिम पंक्तियों में कहता है - *पृथ्वी के बहुत पास आया वह (मंगल ग्रह) / वहीं से किसी निर्मम हाथ ने खींचा मुझे / वहीं से गिरा मैं अपनी जीर्ण-शीर्ण देह में।* इसके पहले वह पृथ्वी पर जीवन की दारुणता के संवेदनापूर्ण ब्यौरे देता है। मंगलेश डबराल पहाड़ के थे और मैदानों में उनका जीवन बीता। उनकी कविताओं में पहाड़ के जीवन-अनुभव, पर्वतीय सौंदर्य और जीवंत पात्र प्रामाणिक रूप से आते हैं। *केशव अनुरागी* और *गुणानंद पथिक* जैसे लोक वादक और लोक गायक तो उनकी कविता में आकर प्रसिद्ध ही हो गये जिनका जीवन हमारे समाज में एक कलाकार की कमजोर हैसियत और नियति को दिखाता हुआ सोचने के लिए बाध्य करता है।

ब्रेख़्त और निराला मंगलेश डबराल के प्रिय कवियों में सर्वोपरि हैं। एक स्वप्न-कथा के माध्यम से दोनों की मुलाकात के द्वारा वे कवि-कर्म और उसकी दुश्वारियों और चुनौतियों को सामने लाते हैं और बताते हैं कि जनता की तरह कविता की भी मुक्ति जरूरी है।

मंगलेश डबराल की कविताओं का दायरा विस्तृत है जिसमें हम हर विषय और भाव-बोध की कविता पाते हैं। ऐसे चितेरे, कला मर्मज्ञ, विचारवान, जन-समर्पित और कविता के प्रति प्रतिबद्ध कवि का हमारे बीच से चला जाना दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी एक कविता उद्धृत करना चाहूँगा -

अनुपस्थिति
यहाँ बचपन में गिरी थी बर्फ
पहाड़ पेड़ आँगन सीढ़ियों पर
उन पर चलते हुए हम रोज एक रास्ता बनाते थे

बाद में जब मैं बड़ा हुआ
देखा बर्फ को पिघलते हुए
कुछ देर चमकता रहा पानी
अंततः उसे उड़ा दिया धूप ने

सम्पर्क- 09415295137

कविता पढ़ते हुए मंगलेश डबराल

वह जिसने रोशन किया था शहर को, उदास कर गया

■ अर्पिता श्रीवास्तव

सामाजिक और राजनीतिक प्रतिबद्धता के सूत्र के साथ आत्मीयता और मानवता के बुनियादी उसूलों में गहरा विश्वास रखने वाले साथी का जाना किसी भी संगठन की क्षति तो है ही पर साथ ही साथ समाज के लिए यह एक ऐसी क्षति है जिसकी भरपाई संभव नहीं। आज के समय में वैज्ञानिक चेतना और तार्किकता का वैसे ही अभाव है और इस बीज से बनने वाले एक मुकम्मल इंसान को खोना उदासी से भरता है। आज के विकट समय में जब एक विशेष पहचान पर आपको तौला जा रहा है फिर भी बिना परवाह किए एक ऐसी लड़ाई जो मानवता, समानता, संप्रभुता और सामाजिक न्याय के लिए लड़ी जा रही है, इसमें एक गहरा आघात लगता है। इस आघात की प्रतिध्वनि से उपजे सन्नाटे में उन गीतों के स्वर गूँज रहे हैं जो कभी हारमोनियम के साथ कभी ढपली के साथ तो कभी यूँ ही गाए जाते रहे हैं। उदासी के स्वरों में भी वे जनगीत ताकत बन स्मृतियों में कभी न मिटने के लिए अंकित हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ इप्टा के महासचिव और राष्ट्रीय समिति के सदस्य अजय आठले असमय कोविड महामारी के शिकार हुए और रायगढ़ के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक आंदोलन में बहुत से कार्यों को अधूरा छोड़ गए, जिन्हें पूरा करने के लिए इप्टा के सभी साथी प्रतिबद्ध हैं।

23 सितंबर को उन्हें कोविड पॉजीटिव होने पर साँस की तकलीफ की वजह से हस्पताल में भरती कराया गया और 27 को सुबह वे नहीं रहे। यह सब इतना अचानक हुआ कि सहसा विश्वास ही नहीं हुआ कि यह खबर सच है। अपने आप में मगन और मस्त रहने वाले अजय भैया का अंदाज़ किसी नए शख़्स के लिए बड़ा अनौपचारिक लग सकता हो पर कुछ पल में ही उनका स्वयं से ही बड़ी सहजता से संवाद आरंभ करना किसी को भी सुखद आश्चर्य में डालता था कि हमारे मन में तो कुछ और चल रहा था पर यह शख़्स में कुछ तो खासियत है, इस चुंबकीय आकर्षण के पीछे उनके व्यक्तित्व की कुछ खासियतों पर बात करना सुखद होगा।

किसी भी क्षेत्र में कार्य-कुशलता और प्रवीणता के साथ यदि किसी शख़्स में इंसान बने रहने का हुनर हो तो वो काबिलियत गौर करने के लायक होती है। निश्चित ही आज के समय में इस काबिलियत वाली शख़्सियतों की कमी से हम दो-चार हो रहे हैं। जीवन के अनुभवों के साथ मनुष्यता की कसौटी पर अपने को हमेशा आगे रखने में भैया का सानी कोई नहीं था। निश्चित ही वे अगर अभी हमारे बीच भौतिक रूप से उपस्थित होते तो इतनी सूक्ष्मता से इस पहलू पर ध्यान नहीं जाता पर अब जब उनके जिए जीवन और उनके साथ बिताए समय को याद कर रही हूँ तो बहुत कुछ बातें और विचार आ-जा रहे हैं। थियेटर के माध्यम से हर पीढ़ी को जोड़कर रखने का जो जिम्मा उन्होंने उठाया उसे बखूबी पूरा किया। रायगढ़ में थियेटर के प्रति समझ पुख़्ता करने में इप्टा का योगदान है जिसमें बहुत से लोगों का सहयोग रहा है पर अग्रिम पंक्ति में भैया ही रहे जिनके पीछे एक कारवाँ हमेशा रहा। कई कठिन परिस्थितियों के बीच भी नाटक करने का जोखिम उठाने के पीछे मुझे लगता है यह प्रेरणा भी कहीं न कहीं उनके मन में रही होगी कि आने वाली पीढ़ी को सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाना है, विवेकशील, तार्किक बनाना है। अपनी समझ और अपने ज्ञान को सीमित न रखते हुए सामूहिक गतिविधियों का परिणाम हमेशा सुखद होता है इस सच्चाई को वे काफी पहले समझ चुके थे इसलिए छोटी-बड़ी गतिविधियों के माध्यम से रायगढ़ में हमेशा इप्टा क्रियाशील रहा। राष्ट्रीय नाट्य समारोह का उत्सव तो बड़े स्तर पर वार्षिक होता था पर इसके अलावा सामूहिक चर्चा जो औपचारिक, अनौपचारिक

रूप से नियमित चलती रही। भैया की यह खासियत रही कि आप उनसे मिलिए और किसी भी समकालीन या वैचारिक मुद्दे की बात उठाइए वे बड़ी गंभीरता से विचार-विमर्श में आपको खींच लेते और अकसर कोई नया पहलू आप उनसे बात करने के बाद हासिल करते। चूंकि उनसे व्यक्तिगत रूप से जुड़ाव का एक लंबा अरसा हुआ सो उन्हें याद करने के क्रम में कई ऐसी बातें भी आएँगी जो हो सकता है किसी के लिए खास मायने न रखती हों पर वे बातें परोक्ष रूप से इंसान गढ़ने का काम कर रही थी। कहा जाता है संवाद के पुल होने से किसी भी तरह की वैचारिक बाढ़ और किसी भावना की अतिशयता से आप बचते हैं तो वही पुल का काम अजय भैया निभा रहे थे। हाँ तो औपचारिक-अनौपचारिक चर्चाओं के साथ, नाटकों, लेखों की रीडिंग, रिहर्सल, लघु फिल्में, डॉक्यूमेंट्री बनाना, किसी खास मुद्दे पर विरोध के लिए गाँधी पुतले पर खड़े होकर विरोध के नारे लगाने, किसी के घर में सुख-दुख के आयोजन में सहजता से हिस्सा बन जाने, पान ठेलों, चाय ठेलों में या सार्वजनिक जगहों में भी लगातार बातचीत करते रहने का उनका अभ्यास क़ाबिल-ए-तारीफ़ है, आज की भागती ज़िंदगी में जब लोग अपनों के लिए भी समय का रोना रोते हैं और अपनी बनी-बनाई दिनचर्या के जरा सा इधर-उधर हो जाने पर कभी व्यक्त तो कभी अव्यक्त चिड़चिड़ाहट से भर जाते हैं उसमें इस तरह की हिस्सेदारी और उपस्थिति के बहुत गहरे मायने छुपे हैं। आज के बाजार युग से होने वाले परिवर्तनों की बखूबी समझ थी उन्हें और इसके राजनैतिक और सामाजिक निहितार्थ के साथ होने वाले पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति उनकी चिंता नियमित रूप से ज़ाहिर होती थी। प्रतिस्पर्धा की गलाकाट सभ्यता से त्रस्त बच्चों और युवा वर्ग के अभिभावकों की मनःस्थिति को भी अपने स्तर पर दूर करने के लिए निरंतर संवाद को उन्होंने तरजीह दी। अपने पैरों में खड़े होने के लिए सदैव प्रोत्साहन के साथ सहयोग और समाज के प्रति जिम्मेदार बनाने की कोशिश का नाम है अजय भैया। उनके साथ बिताए समय और परिचितों के द्वारा जब यह पढ़ा जा रहा होगा तो निश्चित ही उनके अपने अनुभव चित्र उनकी आँखों में तैरेंगे और इससे भी जुदा बहुतेरी यादों और अनुभवों को याद करने से यह संस्मरण एक मुकम्मल दूरी तय कर पाएगा।

लोकतांत्रिक मूल्यों पर विश्वास करने वाली शख़्सियतें बड़ी सहजता से बात रखती हैं, सुनने की, तर्क-विमर्श करने का स्पेस देती हैं चाहे वे धुर विरोधी राजनीतिक विचारधारा के लोग ही क्यों न हों। यह खासियत अच्छे-खासे बुद्धिजीवियों में भी आसानी से देखने नहीं मिलती। मनुष्य की हर संभावनाओं को सम्मान देने का मान रखना अपने आप में विचारणीय तथ्य है। हल्के अंदाज़ में बातचीत का होना आपके विचार-तंतुओं को मजबूती देता है और नई तरह से किसी बात को देख पाने की दृष्टि भी। आज के समय में संवाद के कई रास्ते अवरुद्ध पड़े हैं, विचार और निर्णय थोपे जा रहे हैं। एक अजब कशमकश से

अजय आठले

हमारा समाज गुजर रहा है जहाँ एक आम इंसान की कहीं सुनवाई नहीं है। लोकतंत्र का हर खंभा अपनी मजबूती का मात्र प्रतीक चिन्ह बनकर रह गया है, निंदनीय कृत्यों और लोकतांत्रिक मूल्यों को सहेजने वाली आवाजों को चुप करने की चालाक कोशिशों से सत्ता का सीना गर्व से तना हुआ है, अपने दंभ और दक्षिणपंथी मंसूबों को एड़ लगाकर अपना विजयी रथ चहुँओर नाना प्रकार की रीतियों से दौड़ा रहा है, ऐसे निराश और उदास समय में समाज में ऐसी आवाजें जो स्थानीय स्तर पर अपना एक वजूद रखती हैं और सामाजिकता के साथ सांस्कृतिक प्रदूषण से अपने शहर और लोगों को बचाकर रख पाने की कोशिश करती हैं उनका प्रयास दूर तक चीजों को देख पाने और समझ पाने का मूल्य है जिसकी मूल्यवत्ता बाजार की भाषा में और प्रगतिशील लहजे में भी कहें तो वो अनमोल है। इसी एहसास को रिक्तता दे जाने का नाम है अजय भैया। यह सब लिखते हुए कई और लोगों को अपने आसपास की ऐसी शख़्सियतों की याद आएगी ऐसा मेरा विश्वास है क्योंकि जड़ हो चुके समाज में रुके रक्त-प्रवाह को दौड़ाना एक आम इंसान का जज़्बा नहीं हो सकता। एक आम इंसान अपने परिवार की उलझनों और प्रगति की चिंता में ही मुब्तिला रहता है पर जब वास्तव में मनुष्यता पर हावी संकट में अपनी लघुता को नज़रअंदाज़ कर कोशिशों को जो बिना रुके जारी रखता है उसे हम मनुष्यता की विकास यात्रा में दर्ज मानते हैं। यहाँ यह बात दर्ज करना जरूरी समझती हूँ कि प्रगतिशील मूल्यों में व्यक्ति पूजा या व्यक्ति गान की बजाय विचारों को तरजीह दी जाती है तो आप पाठक भी इसे मात्र व्यक्तिगत अनुभवों पर लिखा संस्मरण न समझे, व्यक्ति गान समझने की भूल न करें और उन प्रगतिशील मूल्यों के साथ एक प्रतिबद्ध साथी की याद समझें जिनकी इस दुनिया से विदा के बोझिल और तकलीफदेह क्षणों को उन विचारों की आग को ज़िंदा रखने की एक सार्थक कोशिश के रूप में देखें। अजय भैया विचारों की मशाल तले हम हमेशा गाएँगे और याद करेंगे आपको पाश की इस कविता के साथ

हम लड़ेंगे साथी उदास मौसम के खिलाफ़
हम लड़ेंगे साथी गुलाम इच्छाओं के लिए....

सम्पर्क- 09431761595